अन्तर्राष्ट्रीय हिन्दी एवं सामाजिक विज्ञान शोध पत्रिका
Peer Reviewed Refereed शोध पत्रिका
ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

मैथिलीशरण गुप्त जी के काव्य में सामाजिक चेतना

डॉ कामना कौशिक
सह प्रवक्ता हिन्दी
वैश्य महाविद्यालय भिवानी

श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का जन्म 3 अगस्त 1886 को उत्तर प्रदेश के झाँसी जिले के चिरगाँव नामक गाँव में हुआ। इनकी माता का नाम सरयू देवी और पिता जी का नाम सेठ रामचरण गुप्त था। सेठ रामचरण गुप्त जी ने अपने नाम अनुसार अपना जीवन राम भक्ति में व्यतीत किया। ये श्री राम के परम भक्त थे। अतः गुप्त जी के मन पर बाल्यावस्था से ही वैष्णव भक्ति के संस्कार पड़ गए। ये विभिन्न भाषाओं में साहित्य रचना करते थे। प्रारम्भ में इनकी कविताएँ 'वैश्योपारक' में प्रकाशित हुई। तत्पश्चात् 'सरस्वती' में प्रकाशित होने लगी। मैथिलीशरण गुप्त जी ने रामभक्त होते हुए भी 'द्वापर' में कृष्ण भक्ति, 'काबा और कर्बला' में इस्लाम धर्म तथा 'गुरूकुल' में सिक्ख धर्म की मान्यताओं का प्रतिपादन किया। इनके द्वारा रचित 'जयभारत' 'साकेत' महाकाव्य है। झंकार इनका गीतकाव्य है। 'कुणाल गीत' 'रत्नावली' 'नहुष' 'सैरन्ध्री' 'हिडिम्बा' 'युद्ध' 'भारत–भारती' 'किसान' 'सिद्धराज' 'पंचपटी' 'विष्णुप्रिया' 'अर्जुन और विसर्जन' आदि इनकी प्रमुख काव्य कृतियाँ है। 'जयद्रथवध' प्रमुख खण्डकाव्य है। 'झंकार' इनका उल्लेखनीय गीतिकाव्य है। इनके द्वारा रचित नाटकों में तिलोत्तमा, चन्द्रहास, पृथ्वी पुत्र, लीला और अनघ आदि है। इन्होंने काव्य की सभी विद्याओं प्रबंध, मुक्तक गीतिकाव्य आदि पर कलम चलाई। इनका काव्य क्षेत्र अत्यन्त विस्तृत व व्यापक है। इन्हें समन्यवादी कवि भी कहा जाए तो गलत न होगा। नवप्रेम, राष्ट्रीय भावना, भक्ति भावना, गाँधीवादी भावना, मानवतावादी भावना, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक उतार–चढ़ाव आदि को अपने काव्य में सशक्त रूप से अभिव्यक्त किया। गुप्त जी ने सच्चे मन से शुद्ध व श्रेष्ठ विचारों से पूर्ण ईमानदारी के साथ अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। आजीवन साहित्य सेवाओं में लीन गुप्त जी को इनकी विशिष्ट सेवाओं के कारण भारत सरकार द्वारा राष्ट्र कवि की उपाधि प्रदान की गई। गुप्त जीइस नश्वर शरीर को त्यागकर 12 दिसम्बर 1964 को स्वर्गवासी हो गए। शारीरिक रूप से वे हमारे मध्य नहीं है, लेकिन अपनी अजर–अमर रचनाओं से वे सदैव हमारे मध्य उपस्थित रहेंगे।

एक सच्चे देश भक्त, समाज–सुधारक और रचनाकार सदैव युगीन परिस्थितियों के प्रति जागरूक रहते हैं। युगीन उतार–चढ़ाव को आत्मसात करके अपने युगीन वातावरण को नयी दिशा देने का प्रयास करते है। मानव की चिन्तन शक्ति को विकसीत करते है। उनमें सही–गलत, नैतिक–अनैतिक की पहचान करने की क्षमता उत्पन्न करते है। सही और नैतिक के साथ खड़े होने के लिए तैयार करते है। गलत–अनैतिक का विरोध करने की हिम्मत पैदा करते है। अतः कवि अपने युग की सृष्टि है और प्रत्येक महाकवि अपने युग विशेष से प्रभावित होता है। साहित्यकार के विचार अपने युग की संचित

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

सम्पति के अक्षय भण्डार होते है। राष्ट्र कवि गुप्त जी की रचनाओं में आधुनिक युग की झलक पूर्णयता विद्यमान है। आधुनिकता बोध का चित्रण जितना गुप्त जी की रचनाओं में दर्शनीय है, उतनातदयुगीन अन्य कवियों के काव्य में देखने को नहीं मिलता। 'साकेत' महाकाव्य के सभी पात्र आधुनिक है, नारी पात्र राष्ट्रीय भावना से ओत–प्रोत है। इनकी काव्य–कृतियों में युग बोध स्पष्टतयः दृष्टिगोचर होता है। मैथिलीशरण गुप्त का अवतरण हिन्दी साहित्य के द्विवेदी युग में हुआ। द्विवेदी युगीन काव्य में युग चेतना का विकास बहुमुखी हुआ है। गुप्त जी ने आधुनिक युगीन प्रवृतियों के साथ–साथ पुरातन और नवीन में भी सामंजस्य स्थापित किया। इन्होंने अतीत के गौरव का आख्यान करते हुए उच्च आदर्शों को प्रतिष्ठित किया है। नवजागरण युग का जो शंखनाद भारतेन्दु हरिशचन्द्र जी ने किया था। उस उद्देश्य को मंजिल तक ले जाने में गुप्त जी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसका मुख्य उद्देश्य देशवासियों को युग–बोध कराना था। गुप्त जी के काव्य में युगीन परिस्थितियों का अंकन बड़े ही सशक्त ढंग से हुआ है। प्रस्तुत लेख में मैं गुप्त जी के काव्य में सामाजिक युग बोधको चित्रित कर रही हूँ।

समाजिक युग बोध से तात्पर्य सामाजिक वातावरण के प्रत्यक्ष ज्ञान या संबोध से है। गुप्त जी ने सामाजिक परिवेश को जानने पहचानने और समझने के बाद उसे अपनी कलम से अभिव्यक्त किया है। मनुष्य सामाजिक प्राणी होने के कारण समाज में रहकर अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता हुआ, सामाजिक माप–दण्ड, आदर्शों का अनुसरण करते हुए जीवन पथ पर बढ़ता चलता है। मानव की प्राथमिक पाठशाला उसका अपना घर है। अतः परिवार समाज की मौलिक इकाई है। जिस प्रकार कर्ता और कर्म का अटूट संबंध होता है ठीक उसी प्रकार साहित्य और समाज अन्योन्याश्रित है। गुप्त जी ने सामाजिक जीवन में बाल–विवाह, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विधवा विवाह निषेध, हरिजन समस्या, अशिक्षा, जातिभेद, अभिशष्ट नारी जीवन आदि बिन्धुओं के माध्यम से सामाजिक कुप्रवृतियों का समाधान प्रस्तुत करते हुए मानवतावाद, समाज–सेवा और विश्व बंधुत्व का संदेश देते हुए आदर्श समाज की स्थापना की कल्पना की।

मानवतावाद की भावना भारतीय संस्कृति की विशिष्टता है। 'सर्वेभवन्तुः सुखिनः' की पंक्ति आधुनिक युग में पुनर्जिवित की गई है। गुप्त जी मानवतावाद के साथ लोकहित की भावना को समन्वित कर मानवतावाद के आदर्श स्वरूप को प्रकट करने वाले कवि थे। इन्होंने मानवतावाद को ईश्वर के समक्ष रखा है। इनका काव्य सुख भोग हेतु नहीं है अपितु मानवतावाद का अनवरत विकास है। मानव की सेवा ही ईश्वर की पूजा है। इससे बड़ी कोई भक्ति नहीं। गुप्त युग में मानवतावाद प्रेम की धूम मची हुई थी फिर गुप्त जी इससे अछूते कैसे रह सकते थे। इनकी सम्पूर्ण रचनाओं में मानवतावाद की झलक सर्वत्र दृष्टिगोचर होती है। 'साकेत' काव्य की निम्न पंक्तियां मानवतावाद की भावना को चित्रित करती है :–

''राम तुम मानव हो, ईश्वर नहीं हो क्या?
विश्व में रमे हुए नहीं सभी कहीं हो क्या?''[1]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

'साकेत' के राम मनुष्यत्व का नाटक खेलने के लिए अवतरित हुए है, ताकि आगामी मानव इनके जीवन के आदर्श एवं अवलम्ब का अनुसरण करे और सम्पूर्ण मानव जाति के लिए यहीं धरा स्वर्ग बन जाए यथा :

''भव में नव वैभव व्याप्त कराने आया,
नर को ईश्वरता प्राप्त कराने आया।
संदेश यहां मैं नही स्वर्ग का लाया,
इस भूतल को ही स्वर्ग बनाने आया।।''[2]

गुप्त जी का काव्य मानव की प्रेरणा का स्त्रोत है। 'साकेत' के राम ब्रह्म नहीं, अपितु एक राजा राम है। एक राजा के श्रेष्ठ गुणों से उनके चरित्र को मंडित करके आज के शासकों को उनके कर्तव्यों का बोध कराना ही गुप्त जी की इस कविता का प्रमुख लक्ष्य है। मानवीय चरित्र की जितनी भी सम्भावनाएँ हो सकती है, उनकी समष्टि ही राम का चरित्र है। 'साकेत' में राम के चरित्र के माध्यम से मानवता के प्रेम का चरमोत्कर्ष दृष्टिगोचर होता है, जो विश्व के सभी मानवों को मानवीय प्रेम का अमर सन्देश दे रहा है। इसी प्रकार 'जयभारत' रचना में भी मानवतावाद के सभी तत्त्वों का चित्रण देखने को मिलता है। धर्मराज युधिष्ठर का चित्रांकन युग धर्म–मानववाद की प्रतिष्ठा करता है।

विश्व दो महायुद्ध में हुई हिंसा, आंतक, रक्तचाप, अनाचार, मानवता की हत्या से भयभीत था। चारों तरफ अविश्वास का वातावरण बना हुआ था। भाई–भाई का दुश्मन बना हुआ था। लोग एक–दूसरे के रक्त के प्यासे थे। साम्प्रदायिक दंगो व झगड़ो ने गुप्त जी के मन को छलनी–छलनी कर दिया। सम्पूर्ण विश्व में आतंक व भय से कवि का अन्तर्मन व्यथित हो जाता है। समाज में एकता छिन्न–भिन्न हो रही थी। समाज सुधारकों व राष्ट्र प्रेमियों ने साम्प्रदायिक एकता व मानवतावाद को स्थापित करने के लिए हर सम्भव सार्थक कदम बढ़ाए। गुप्त जी की रचना 'गुरूकुल' भी इसी सन्देश पर बल देती है।

''हिन्दूहो या मुस्लमान हो, नीच रहेगा फिर भी नीच
मनुष्यत्व सबके ऊपर है, मान्य नही मंडल के बीच।''[3]

साम्प्रदायिक एकता और मानवता का पाठ पढ़ाते हुए गुप्त जी काबा और कर्बला में सर्वधर्म समन्वय का सन्देश देते हुए कहते हैं :–

''हिन्दु–मुस्लमान का मानस–मिलन तीर्थ वह महा–प्रवाह''[4]

विश्वयुद्ध से जन्मी विषम परिस्थितियों ने कवि गुप्त की आत्मा को झकझोर दिया। कवि मन क्षोभ व दुख से भर गया। भारत देश अंग्रेजी दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ निरन्तर पतन की ओर उन्मुख हो रहा था। गुप्त जी ने अपनी लेखनी को हथियार बनाकर भारतीय जनता की सोई हुई ताकत को जगाने का प्रयास किया। उन्हें याद दिलाया कि हम माँ भारती की सन्तान है जो जनरक्षा व जन–कल्याण का पाठ सिखाती है। अंग्रेजों ने अपनी स्वार्थ सिद्धी हेतु भारत में फूट डालो और राज

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

करो की नीति अपनाकर भारत में जातिय बीज को हवा दी। सम्पूर्ण देश की जनता में भाईचारे व सद्भाव की भावना को जागृत करने हेतु युगान्तकारी कवि गुप्त जी 'भारत–भारती' रचना में कहते हैं :–

''प्रत्येक जन प्रत्येक जन को बन्धु अपना जान लो।
सुख–दुख अपने बन्धुओं का आप अपना मान लो।''[5]

मानवता की स्थापना तभी साकार हो सकती है जब नर और नारी दोनों को समानता का अधिकार प्राप्त हो। नारी को मात्र भोग्या न माना जाए, उसे घर की चाहरदिवारी तक सीमित न किया जाए। प्रकृति ने बिना पक्षपात के दोनों को अलग–अलग विशिष्टता प्रदान की है। हमें नारी का सम्मान करना चाहिए और सृष्टि का अनिवार्य अंग मानकर उसकी महत्ता व गुणों को खुले दिल से स्वीकार करना चाहिए। गुप्त जी ने खुले मन से उच्च सोच के साथ नारी महत्ता को स्वीकार किया है। इनकी रचनाओं में कुन्ती, द्रोपदी, शकुन्तला, सीता, कैकेयी, उर्मिला, माण्डवी देवकी, उत्तरा, विष्णुप्रिया आदि अविस्मरणीय नारी प्रधान पात्रों को चित्रित किया गया है। प्राचीनता व नूतनता का समन्वय करते हुए उपेक्षित नारी के प्रति नई क्रांतिकारी भावना का उदय करने का स्तुत्य प्रयास किया है। नारी को मात्र भोग्या मानना नारी का अपमान है। हमें इन संकीर्ण तुच्छ विचारों को त्यागना होगा, ऐसी सोच का खण्डन करना होगा। नारी काम–कामिनी नही रही, उसकी अपनी पहचान है। गुप्त जी 'पंचवटी' काव्य में कहते हैं :–

''मैं अपने ऊपर अपना ही
रखती हूं अधिकार सदा
जहां चाहती हूँ करती हूँ
मैं स्वच्छंद विहार सदा''[6]

हमारा समाज पुरूष प्रधान समाज है। यहाँ पुरूष के विचारों को प्राथमिकता दी जाती है। पुरूष के फैसले को आदर की दृष्टि से देखा जाता है। उसे नैतिक–अनैतिक सभी प्रकार के कार्य करने की स्वतंत्रता है। पुरूष की चरित्रहीनता को भी अनदेखा किया जाता है। उसे घर का मुखिया, गृहस्वामी मानकर उसके अक्षम्य अपराधों को भी माफ कर दिया जाता है। वह घर या घर से बाहर किसी भी प्रकार का घृणित कार्य करे, उस पर कोई प्रश्न चिह्न नहीं। इसके विपरीत उसकी पत्नी यदि सभ्य, चरित्रवान, उदार, करूणाशील, त्याग, ममता, प्रेम की मूर्ति भी तो उसका पति जैसा चाहे वैसा उसके साथ व्यवहार कर सकता है, उसे सन्देह के कटघरे में खड़ा कर सकता है। उसके चरित्र को लांछीत कर सकता है। वह कितनी ही समर्पित क्यों न हो फिर भीवह उसके प्रति अविश्वास भी प्रकट कर सकता है। एक समय था जबवह चुपचाप, लाचार, विवश होकर सब चुपचाप बर्दाश्त कर जाती थी, परन्तु आधुनिक नारी अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए अपने अधिकारों के लिए लड़ती है। गुप्त जी की रचना 'पंचवटी', 'यशोधरा' और 'द्वापर' में विरोध का स्वर मुखरित हुआ है। यथा :–

''अविश्वास हा! अविश्वास ही,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

नारी के प्रति नर का।
नर के तो सौ दोष क्षमा है
स्वामी है वह घर का।''[7]

द्वापर में ही अन्यत्र स्थल पर नारी विरोध की चिंगारी स्पष्टतयः दृष्टिगोचर होती है :–

''अधिकारों के दुरूपयोग का,
कौन यहां अधिकारी
कुछ स्वत्व भी नहीं रखती क्या,
अर्द्धांगिनी तुम्हारी।।''[8]

भारत देश जिसे विश्व गुरू कहा जाता है, उस देश में नारी का स्थान पुरूष के बाद समझा जाता है। बात इतने पर ही समाप्त नहीं होती, नारी को इसके अतिरिक्त भी अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। बाल विवाह किसी अधेड़ उम्र के साथ कर दिया जाता है,परिणामस्वरूप अल्पायु में ही विधवा हो जाती है। विधवा स्त्री का सामाजिक शुभ कर्मों से बहिष्कार कर दिया जाता है। पुरूष समाज की कुदृष्टि उसे इस हालात मे भी चैन से नहीं रहने देती। भारतीय नारी की समस्याएं सुरसा के मुख की भांति मुंह खोले खड़ी रहती है। उसे जीवन में पथ–पथ पर अनेक प्रकार की समस्याओं से जूझना पड़ता है।

भारत देश में ऋषि–मुनि, साधु–सन्त सिद्धि प्राप्ति हेतु अज्ञात स्थान पर चले जाते है। वे अपने वैवाहिक जीवन को सिद्धि प्राप्ति में बाधक मानते है। अतः वे चुपचाप बिना बताए, सब कुछ त्यागकर सिद्धि प्राप्ति के चले जाते है। यशोधरा को अपने पति द्वारा उठाया गया यह कदम उचित प्रतीत नहीं होता। अपने पति बुद्ध द्वारा गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों से विमुख हो सन्यासी जीवन जीने को अनुचित मानती है। क्या पति–पत्नी साथ रहकर मुक्ति साधना नहीं कर सकते? यदि वैराग्य से ही सिद्धि प्राप्ति होती है, मोक्ष ही जीवन का सर्वोच्च ध्येय है तो हम नारियां इससे वंचित क्यों? विवाह के बाद अपनी गृहस्थ जिम्मेदारियों को त्यागकर कैसे वह मुक्ति का राह पकड़ सकता है। यशोधरा कहती है :–

''मैं अबला! पर वे तो विश्रुत वीर बली थे मेरे
मै इन्द्रियांसक्त? पर वे कब थे विषयों के चेरे?
अयि मेरी अर्द्धांगि–भाव, क्या विषय मात्र थे मेरे?
हाँ! अपने अंचल में किसने ये अंगार बिखेरे?[9]

'विष्णुप्रिया' में विष्णुप्रिया सोचती है कि यदि स्त्री भी मोक्ष, सिद्धि हेतु अपने गृहस्थ जीवन का त्याग कर दे, वैराग्य लेकर अपने कर्तव्य से इतिश्री कर दे, तो क्या यह पुरूष प्रधान समाज आदर–सम्मान के साथ उसकी सिद्धि इच्छा का स्वागत करेगा? यशोधरा के पास तो उसका पुत्र राहुल है, विष्णुप्रिया का

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

जीवन यशोधरा से अधिक संघर्षमयी है। उसके जीवन की त्रासदी, पीड़ा को केवल वही समझ सकती है। गुप्त जी सिद्धि हेतु गृहस्थी त्याग करने वाले पुरूषों पर व्यंग्य करते हुए कहते हैं :–

''अबला के भय से भाग गए,
वे उससे भी निर्बल निकले।
नारी निकले तो असती है
नर यति कहा पर चल निकले।''[10]

यशोधरा अकेले ही अपने बेटे राहुल का पालन–पोषण करती है। आत्म सम्मान के साथ वह अपने कर्तव्य का निर्वहन करती है। हमारे यहां जन्मकाल से ही लड़का–लड़की में पक्षपात किया जाता है। लड़के को घर का चिराग माना जाता है। उसे वंशज कहा जाता है। उसे लड़की से अधिक अधिकार व स्वतन्त्रता दी जाती है। शिक्षा प्राप्त करने का भी प्रथम अधिकार घर के लड़के को ही दिया जाता है। शिक्षा का प्रथम अधिकार लड़की को क्यों नहीं दिया जाता है। लड़की को शिक्षित करने का अर्थ है दो परिवार शिक्षित। लड़का–लड़की में आखिर इतना भेद क्यों? जब प्रकृति ने सम्मान अधिकार प्रदान किए हैं तो हम पुरूष क्यों नारी अधिकारों का हनन कर रहे है। नारी के सर्वांगिण विकास में ही नर और राष्ट्र का विकास निहित है। अतः इसे भी नर के समान अधिकार दिए जाए। नारी शिक्षा ही एकमात्र ऐसा विकल्प है जिससे हम काफी हद तक असमानता को दूर करने में सफल हो सकते है। गुप्त जी स्त्री शिक्षा पर बल देते हुए कहते है :–

''क्या कर नही सकती भला यदि शिक्षित हो नारियाँ?
रण–रंग, राज्य सु–धर्म रक्षा कर चुकी सुकुमारियाँ।
सोचो नरों से नारियाँ किस बात में है कम हुई?
मध्यास्थ में शास्त्रार्थ में है भारती के सम हुई।।''[11]

केवल पुरूष को शिक्षित करने से ही शिक्षा से समाज उन्नति के पथ पर आगे नही बढ़ सकता। जीवन के दोनों पहियों नर और नारी के शिक्षित होने से ही समाज व राष्ट्र की उन्नति संभव है। भावी पीढ़ी को शिक्षित करने का दायित्व पुरूष से अधिक नारी संभालती है। अतः उसको शिक्षित होने का अर्थ है भारत का भविष्य शिक्षित। स्त्री शिक्षा के समर्थक गुप्त जी नारी शिक्षा पर बल देते हुए कहते हैं :–

''विद्या हमारी भी न तब तक काम में कुछ आएगी,
अर्द्धांगिनी को भी सुशिक्षा दी न तब तक जायेगी।
सर्वांग के बदले हुई यदि व्याघात पक्षाघात की,
तो भी न क्या दुर्बल तथा व्याकुल रहेगा वातकी।''[12]

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

नारी उन्नति में ही देश की उन्नति निहित है। त्याग, क्षमा, दया, करूणा, सयंम, ममता, प्रेम, विश्वास आदि गुणों से सम्पन्न नारी की स्वाधीनता और सम्पन्नता में ही राष्ट्र का कल्याण है। विश्व बन्धुत्व का सन्देश तभी साकार होगा, जब हम सब मिलकर नारी को समाज के उच्च व आदर्श स्थान पर प्रतिष्ठित करने का प्रयास करेंगे। उसके स्वाभिमान, मान सम्मान व स्वतंत्रता का हनन नहीं करेंगे। भारतीय संस्कृति अपने घर, परिवार, देश की एकता व अखण्डता को ही स्थापित नहीं करना चाहती अपितु विश्व में वह एकसूत्रता और आत्मीयता के बीज बौना चाहती है। इसलिए भारतीय संस्कृति को सत्यम् शिवम् सुन्दरम् कहा जाता है। गुप्त जी का काव्य 'वसुधैव कुटुम्बकम' की भावना पर आधारित है। उनके काव्य में समस्त संसार के व्यक्तियों के प्रति कल्याण की भावना निहित है। गुप्त जी के प्रमुख महाकाव्य 'साकेत' के अनेक सर्गो में यह झलक दिखाई देती है। पारस्परिक एकता व सद्भाव ही संसार की अमूल्य निधि है। कवि गुप्त जी विभीषण के माध्यम से विश्व बंधुत्व की भावना को चित्रित करते हुए कहते हैं :–

''तात, देश की रक्षा का ही करता हूँ मैं उचित उपाय,
पर वह मेरा देश नहीं जो करे दूसरों पर अन्याय
किसी एक सीमा में बधंकर रह सकते है क्या यह प्राण
एक देश क्या अखिल विश्व का तात, चाहता हूँ मै त्राण''[13]

गुप्त जी सम्पूर्ण संसार का कल्याण करना चाहते है। भारतवासियों से भी गुप्त जी यहीं आग्रह करते है कि वे आत्म शुद्धि से ही भारत का उद्धार कर समस्त विश्व में बंधुत्व के सन्देश का प्रचार–प्रसार करे। विश्व बंधुत्व की भावना व कामना अपने मन में संजोए गुप्त जी अपनी काव्यकृति 'हिन्दू' में कहते हैं :–

''तुम हो विश्व–कुटुम्बी आर्य, हों तद्रूप तुम्हारे कार्य,
प्रेम, देश को करके पार, करे विश्व में पुनः प्रसार।
करके पहले आत्म–सुधार, कर लो भारत का उद्धार
फिर लोकोपरक में लीन, विचारों सभी कही स्वाधीन।''[14]

भारत देश एक कृषि प्रधान देश है। यहाँ की अधिकांश जनता गांवो में ही निवास करती है। राष्ट्र पिता महात्मा गांधी जी ने किसानों को सभी प्रकार की सुख–सुविधाएं देने के अनेक प्रयत्न किए। गांधी जी ने कृषकों को देश का राजा कहकर उनके महत्त्व को रेखाकिंत करने का प्रयास किया। कवि गुप्त जी ग्रामीणों की दीन–हीन दशा को परिवर्तित करना चाहते थे। ग्रामीण जीवन को साधन–सम्पन्न बनाने के लिए व उन्नत बनाने के लिए गुप्त जी ने विभिन्न प्रयास किए। ग्रामीण परिवर्तन की सोच उनकी रचनाओं में स्पष्टतय परिलक्षित होती है यथा :–

''गांव–गांव खुल रही पाठशालाएँ अपनी,
कण्ठ–कण्ठ में पड़े वर्ण मालाएँ अपनी।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

साक्षर होकर अपढ़ वर्ग भी बात कहेंगे,
ग्राम रहेंगे, ग्राम्य भाव अब नही रहेंगे।''[15]

गुप्त जी ने न केवल ग्रामीण जीवन को उन्नत बनाने के लिए प्रयास किए अपितु तद्युगीन समाज में जाति प्रथा का जो जहर फैला हुआ था उसे भी दूर करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। अस्पृश्यता को मिटाने के लिए, अछूत जाति के मनोबल को टूटने से बचाने के लिए गुप्त जी की रचनाओं में क्रान्ति का बिगुल बजने लगा। समाज में अछूतों को अपनाने तथा उनके प्रति समता की भावना रखने का सन्देश देते हुए कवि गुप्त जी 'पंचवटी' में कहते हैं :–

''गुह, निषाद, शवरों तक का मन रखते है प्रभु कानन में,
इन्हे समाज नींच कहता पर है ये भी तो प्राणी इनमें भी मन और भाव हैं,
किन्तु नही वैसा प्राणी।''

राष्ट्रकवि गुप्त जी हरिजनोद्वार की कामना करते कहते है :–

''बढ़ो, बढ़ाओ अपनी बांह,
करो अछूत जनो पर छांह
हैं समाज के वे ही सपूत
रखते है वो सब को पूत''[16]

गुप्त जी तद्युगीन सामाजिक विकृतियों से डरे नही, घबराएं नहीं अपितु उनका डटकर सामना किया। संकीर्णताओं को जड़ से खदेडने का प्रयत्न किया। गुप्त जी का ध्येय परिवार कल्याण, समाज कल्याण, राष्ट्र कल्याण से परे विश्व कल्याण रहा है। विश्व बधुंत्व की भावना को मन में संजोए गुप्त जी ने अपनी रचनाओं के माध्यम से हानिकारक विकृतियां जो मानव विनाशक है, उन विकृतियों को यथार्थ रूप में चित्रित कर नवयुवकों को, समाज–सुधारकों को, राष्ट्रभक्तों को, साहित्यकारों को उनके निवारण के लिए प्रेरित किया। नवयुवकों में मानव सेवा की भावना जागृत करने का प्रयास किया। गुप्त जी ने ऐसे संसार की कामना की है जिसमें सभी के हृदय में सेवा भाव हो। गुप्त जी ने समाज–सेवा की लोकमंगल भावना को अपने काव्य में चित्रित कर सभी को मानव सेवा के लिए प्रेरित किया है। गुप्त जी कहते हैं :–

''रहे द्विजत्व जहां मन माया,
पर सबमें हो शूद्र समाया।
लेकर सेवा भाव उदार,
ऐसा हो मेरा संसार।''[17]

'अनघ' रचना में भी कवि मन की उदारता–सहृदयता का चित्रांकन देखने को मिलता है यथाः

''न तन सेवा न मन सेवा, न जीवन और धन सेवा,

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

मुझे है इष्ट जन सेवा, सदा सच्ची भुवन सेवा।''[18]

यदि हम गहनता से सामाजिक विकृतियों के कारणों को खोजने का प्रयास करेंगे तो हम पाएंगे कि हमारी अधिकांशतयः विकृतियों का कारण अशिक्षा है। यदि मानव सच्चे अर्थों में शिक्षित है तो सकुंचित विचारधारा उस पर हावी हो ही नहीं सकती। इसलिए घर–घर हमें शिक्षा का अलख जगाना चाहिए। शिक्षा रूपी दीपक ही अज्ञानता रूपी कुरीतियों से हमें मुक्ति दिला सकता है।गुप्त जी इसी सत्य को उजागर करते हुए कहते है :–

''विद्या बिना ही अब देख लो, हम दुर्गुणो के दास हैं
हैं तो मनुज हम किन्तु रहते दनुजता के पास हैं।
दायें तथा बायें सदा सहचर हमारे चार हैं,
अतिचार, अन्धाचार है, व्यभिचार, अत्याचार है।''[19]

भारत देश अपनी विशिष्टताओं के कारण विश्व गुरू के रूप में जाना जाता है। मानव सेवा भाव यहां की संस्कृति का अभिन्न अंग है। यहां के नागरिक परमार्थ में विश्वास करते है। आदर्श समाज का निर्माण की कामना करते हुए कवि आर्यो के परमार्थ का अनुकरण करने के लिए प्रेरित करते हुए कहते है :–

''वे आर्य ही थे जो कभी अपने लिए जीते न थे।
वे स्वार्थरत हो मोह की मदिरा कभी पीते न थे।
संसार के उपकार हित जब जन्म लेते थे सभी।
निश्चेष्ठ होकर किस तरह वे बैठ सकते थे कभी।''[20]

सारांश यह कि राष्ट्रकवि गुप्त जी एक सजग व सच्चे कवि थे। सामाजिक जीवन का यथार्थ वर्णन उनकी रचनाओं में हुआ है। गुप्त जी ने सामाजिक विकृतियों को दूर करने हेतु नवयुवकों को प्रेरित किया है। सामाजिक समस्याओं का समाधान भी अपनी रचनाओं में प्रस्तुत किया है। वे एक आदर्श समाज की कल्पना को साकार करना चाहते थे। वे एक ऐसे भारत का निर्माण करना चाहते थे जहाँ सभी वर्गों में समानता, सद्भाव, भाईचारा, समर्पण, कर्तव्यनिष्ठा, मानव सेवा आदि भाव विद्यमान हो। गुप्त जी ने बारम्बार अपनी रचनाओं में विश्व बधुंत्व, वसुधैव कुटुम्बकम, मानव सेवा आदि भावों का प्रचार–प्रसार कर मानव जीवन को सर्वजन हिताय के लिए प्रेरित किया है। निःसन्देह उनके काव्य में उतेजना भी है जिसने हमारा पथ प्रशस्त कर हमें मानव सेवा के लिए प्रेरित किया। गुप्त जी की विशिष्ट प्रतिभा के कारण वे अजर–अमर है।

ISSN: 2348–2605 Impact Factor: 6.789 Volume 10-Issue 4, (October-December 2022)

संदर्भ सूचि–

1. साकेत मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 4
2. साकेत अष्ट सर्ग मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 111
3. गुरूकुल मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 237
4. काबा और कर्बला, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 51
5. भारत–भारती भविष्यत् खण्ड, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 168
6. पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 47
7. द्वापर, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 29
8. द्वापर, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 24
9. यशोधरा, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 33
10. विष्णुप्रिया, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 57
11. भारत–भारती, वर्तमान खण्ड, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 147
12. भारत–भारती, वर्तमान खण्ड, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 185
13. साकेत 'एकादश सर्ग' मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 212
14. हिन्दू, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 379
15. राजा–प्रजा, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 25
16. पंचवटी, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 14
17. हिन्दू, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 105
18. स्वस्ति और संकेत, उद्धत राष्ट्रवाणी से, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 183
19. अनघ, उद्धत मैथिलीशरण गुप्त का साहित्य, पृ० 169
20. भारत–भारती, वर्तमान खण्ड, मैथिलीशरण गुप्त, पृ० 126